कुटनी आइलैंड

शांति और सौंदर्य का अनूठा संगम

उस दिन हल्की गर्म दोपहर थी। हमारी कार ठीक एक बजकर 10 मिनट पर एक ऐसी जगह आकर रुकी, जहां पहुंचते ही लगा कि हम किसी पर्यटन स्थल पर नहीं, बल्कि एक अलग ही मन :स्थिति में प्रवेश कर गए हैं। गांव छूटने के बाद जीवन में बहुत-सी चीजें पीछे रह जाती हैं। उनमें से एक होली भी है। शहरों की होली में रंगों की चमक तो होती है, लेकिन वह मन में उसी तरह नहीं उतरती जैसे गांव में फाग के गीतों के साथ खेली जाने वाली होली उतरती थी। शायद उसी खोई हुई अनुभूति की तलाश में अब हर होली पर मैं किसी नई जगह की ओर निकल पड़ता हूं।

मृदुल कपिल
साहित्यकार

मन के पास प्रकृति की सुंदरता

इस होली पर भी समय और साधन सीमित थे। खजुराहो की यात्रा के दो दिन पूरे हो चुके थे और मेरे पास खुद से चुराया हुआ बस एक दिन और था। उसी दिन मैं अपने साथियों प्रिया और माधव के साथ खड़ा था एक बेहद सुंदर जगह पर कुटनी आइलैंड। मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में, विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल खजुराहो से लगभग 12 किलोमीटर दूर, कुटनी जलाशय के बीच स्थित यह छोटा-सा टापू मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा विकसित किया गया है। पानी से घिरे इस शांत द्वीप पर एमपी टूरिज्म के केवल दस कॉटेज बने हुए हैं, जहां ठहरकर पर्यटक इस जगह की प्राकृतिक सुंदरता को करीब से महसूस कर सकते हैं।

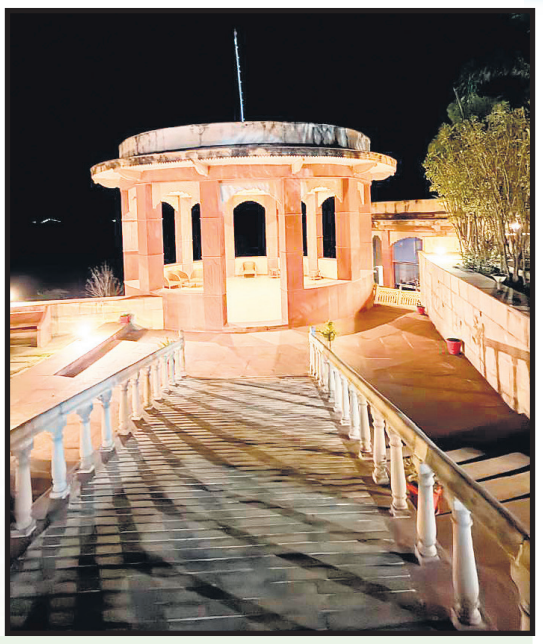

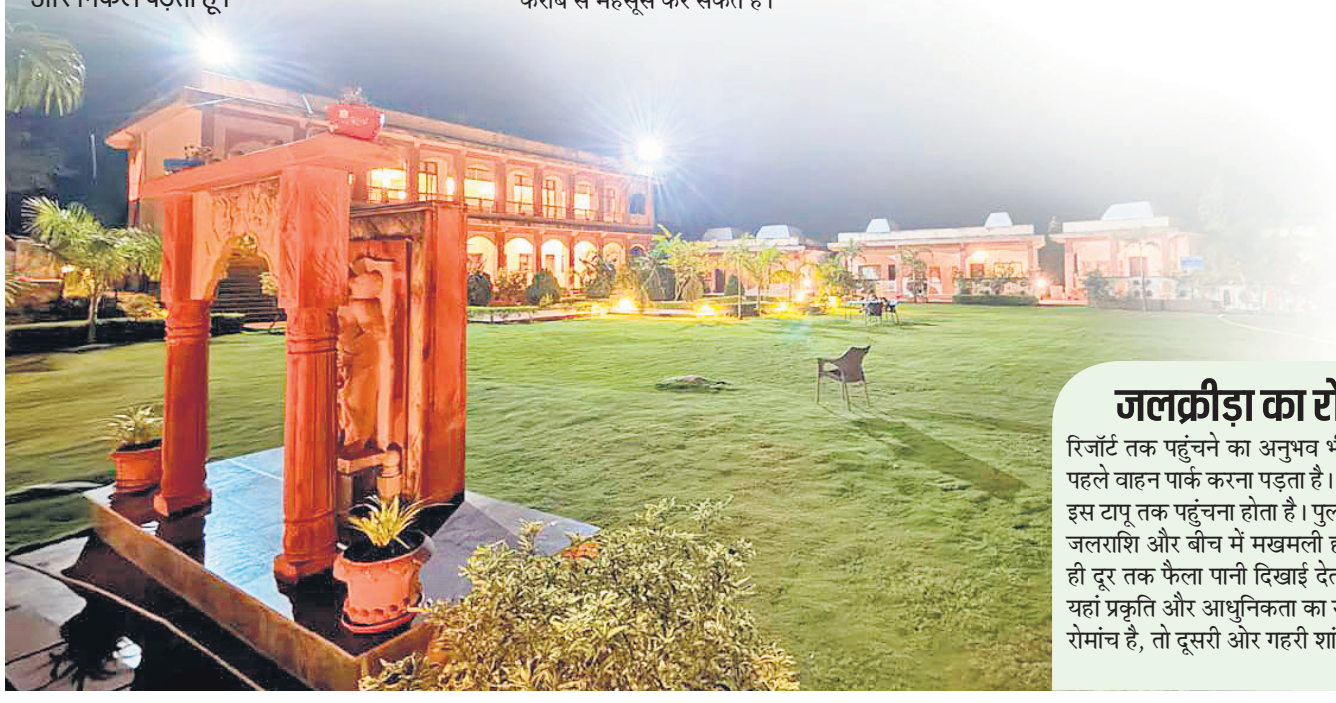

जलक्रीड़ा का रोमांच और गहरी शांति

रिजॉर्ट तक पहुंचने का अनुभव भी अपने आप में अलग है। मुख्य परिसर से लगभग 700 मीटर पहले वाहन पार्क करना पड़ता है। इसके बाद पैदल या ई-कार्ट से एक लोहे के पुल को पार करते हुए इस टापू तक पहुंचना होता है। पुल पार करते ही सामने खुलती है एक शांत दुनिया चारो ओर फैली जलराशि और बीच में मखमली हरियाली से घिरा छोटा-सा टापू। कॉटेज के कमरे का पर्दा हटाते ही दूर तक फैला पानी दिखाई देता है और दरवाजा खोलते ही सामने हरी घास का खुला मैदान। यहां प्रकृति और आधुनिकता का संतुलित मेल दिखाई देता है। एक ओर बोटिंग और जलक्रीड़ा का रोमांच है, तो दूसरी ओर गहरी शांति।

क्षितिज पार उगता लाल सूरज

कई वर्षों बाद यहां आकर मैंने सूर्यास्त और सूर्योदय दोनों देखे। सूर्योदय देखने की उत्सुकता इतनी थी कि जिस व्यक्ति को सामान्य दिनों में सुबह नौ बजे उठना भी कठिन लगता है, वह उस दिन पांच बजे ही उठ गया। सुबह की ओस से भीगी घास पर नंगे पैर टहलते हुए अचानक मन दार्शनिक हो उठा। चारों ओर जल से घिरे उस टापू पर मेरे साथ एक दुबला-सा आवारा श्वान भी टहल रहा था। तभी मन में एक प्रश्न उठा आखिर कितने दिनों बाद मेरे पैरों ने मिट्टी को सीधे छुआ है? मिट्टी में जन्मा, धूल भरे गांव की गलियों में खेला और शहर की गर्म सड़कों पर मीलों पैदल चला मनुष्य कब अपने और धरती के बीच इतनी दूरी बना बैठा, शायद इसका एहसास हमें ऐसे ही क्षणों में होता है। उसी समय क्षितिज के उस पार से उगते हुए लाल सूर्य ने जैसे इस विचार यात्रा को विराम दिया। मन में तुलसीदास की पंक्तियां स्वतः गूंज उठीं "छिति जल पावक गगन समीरा, पंच रचित अति अधम सरीरा।" मैं उस क्षण को अपने कैमरे में कैद करने लगा। कुटनी आइलैंड उन जगहों में से है, जहां यात्रा केवल पर्यटन नहीं रह जाती। कभी-कभी ऐसी यात्राएं हमें नई जगहें नहीं दिखातीं, बल्कि हमारी खोई हुई अनुभूतियों को वापस लौटा देती हैं। इस यात्रा ने मुझे लौटाकर दी, मेरे पैरों के नीचे की मिट्टी।

जॉब का पहला दिन

डर, सीख और एक नई शुरुआत

उस दिन मैं थोड़ी सी डरी हुई थी, क्योंकि ये मेरी पहली जॉब थी और पहला ही दिन। सुबह ठीक 10 बजे मैं ऑफिस पहुंची। हाथ में एक छोटा सा बैग था, जिसमें नोटबुक, पेन और एक हल्की सी घबराई हुई मुस्कान छुपी हुई थी। बाहर से न्यूज चैनल का ऑफिस जितना शांत और सामान्य लगता है, अंदर कदम रखते ही उतनी ही तेज रफ्तार और हलचल महसूस होती है। जैसे ही मैं अंदर गई, सबसे पहला झटका लगा- चारों तरफ चमकते मॉनिटर्स, हर स्क्रीन पर अलग-अलग न्यूज चल रही थी। कोई स्क्रिप्ट लिख रहा था, कोई फोन पर बात कर रहा था, तो कोई ब्रेकिंग न्यूज की तैयारी में लगा था। हर कोई अपने काम में इतना डूबा हुआ था कि समय जैसे दौड़ रहा हो। थोड़ी ही देर में मैनेजर ने मुझे टीम लीडर और बाकी टीम से मिलवाया। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "पहले दिन बस देखो और समझो, असली काम कल से शुरू होगा।" उनकी बात सुनकर थोड़ी राहत भी मिली और उत्साह भी बढ़ गया। फिर मुझे एक डेस्क पर बैठा दिया गया, जहां एक सीनियर रिपोर्टर काम कर रहे थे। उन्होंने मुझे बड़े ही सहज तरीके से न्यूजरूम के बेसिक्स समझाने शुरू किए, कैसे स्टोरी आइडिया बनता है, कैसे फील्ड में जाकर रिपोर्टिंग की जाती है और सबसे अहम, डेडलाइन का क्या मतलब होता है। उनके हर शब्द में अनुभव झलक रहा था और मैं हर बात ध्यान से सुन रही थी।

पूनम मौर्य
हल्द्वानी

कुछ देर बाद मुझे पहला छोटा सा काम मिला-एक खबर की रिसर्च। समय सिर्फ 10 मिनट था। मैंने तुरंत गूगल पर सर्च करना शुरू किया, लेकिन सीनियर ने रोकते हुए कहा, "गूगल सब कुछ नहीं बताता, असली खबर जमीन से मिलती है। हमारे लोकल रिपोर्टर से बात करो।" तभी मुझे समझ आया कि यहां सिर्फ स्पीड ही नहीं, बल्कि सटीकता भी उतनी ही जरूरी है। दोपहर में थोड़ा ब्रेक मिला, लेकिन दिमाग अब भी उसी माहौल में उलझा हुआ था। ब्रेक के बाद एडिटर-इन-चीफ आए और उन्होंने दिन की बड़ी खबरों पर चर्चा की। कौन-सी स्टोरी फोकस में रहेगी, कौन एंकर क्या करेगा, किस खबर के लिए ग्राफिक्स बनेंगे-सब कुछ बड़ी तेजी से तय हो रहा था। मैं बस चुपचाप सब देखती और सीखती रही, मन में एक सपना लिए कि एक दिन मैं भी अपनी पहली रिपोर्टिंग करूंगी। शाम को जब पहला दिन खत्म हुआ, तो शरीर थका हुआ था, लेकिन दिल बेहद खुश था। घर लौटते वक्त एक बात साफ समझ आ गई कि न्यूज चैनल में काम करना सिर्फ एक नौकरी नहीं, बल्कि एक जुनून है। यहां हर दिन नया होता है, हर खबर एक नई कहानी लेकर आती है और सबसे बड़ी सीख यही है कि यहां समय किसी के लिए नहीं रुकता।

संस्मरण

भविष्यफल

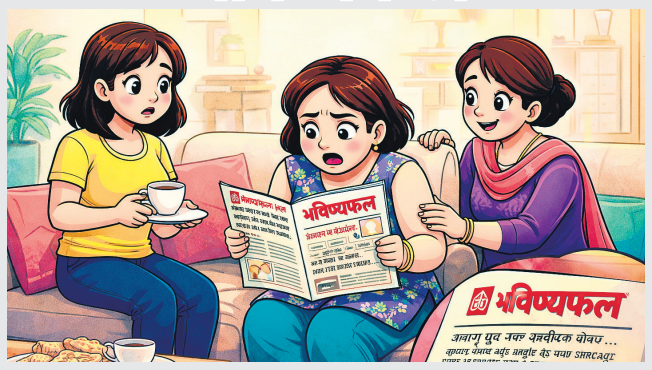

जब काम से छुट्टी हो, तो उदासीनता आ ही जाती है। कॉलेज की छुट्टियां चल रही हैं। समर ब्रेक ऐसा लग रहा है मानो जिंदगी पर ही ब्रेक लग गया हो। कुछ करने के लिए हो ही न और जब काम हो तो काम की थकान, हर रोज यही इच्छा होती है कि काश! आज छुट्टी मिल जाए। शायद हम इंसानों की फितरत ही ऐसी होती है, जो प्रत्यक्ष मिलता है, उसमें कभी खुश नहीं रहते। इसी उधेड़बुन में मैंने मन बदलने के लिए फोन चलाना शुरू कर दिया। कभी इंस्टाग्राम तो कभी फेसबुक, कभी यूट्यूब पर कहीं मन नहीं लगा।

मैंने फोन पटक दिया। क्या करूं! चलो मैगजीन ही पढ़ लेती हूं, कुछ न कुछ ज्ञानवर्धक तो मिल ही जाएगा। यही सोचकर मैं मैगजींस निकाली और पढ़ने लगी। मैगजींस पढ़ते-पढ़ते काफी समय बीत गया। अच्छे लेखों को पढ़कर मन भी खुश हो गया। सच में किताबें हमारी सबसे अच्छी दोस्त होती है। तभी डोर बेल बजी। "नैना" "ओ मम्मी आ गई।" मैंने दरवाजा खोला। मम्मी बाजार से आ गई थीं और साथ में उनकी सहेली रीना आंटी भी आई थीं। "क्या कर रही थी? इतनी देर से दरवाजा क्यों खोला। कब से बेल बज रही हूं। पानी भर के नहीं रखा? जरा थोड़ी देर के लिए कहीं चले जाओ पूरा घर अस्त-व्यस्त सा हो जाता है।" मम्मी बोले जा रहीं थीं। "वो मैं मैगजींस..." "क्या मैं-मैं पूरा घर फैला रखा है।" मम्मी ने मेरी बात बीच में ही काटते हुए कहा। "ओहो..छोड़ो भी..बच्ची है..इधर-उधर बिजी हो गई होगी, अब कर देगी।" आंटी ने मेरा बचाव किया और मुझे मम्मी की डांट से बचाया। रीना आंटी की बात सुनकर मम्मी कुछ नरम पड़ी।

श्रुति सुकुमार
लेखिका, बरेली

रीना आंटी बहुत ही खुशमिजाज व बिंदास किस्म की महिला है। हर जगह हंसी-खुशी का माहौल बना ही देती है। कोई ऐसी-वैसी बात हो, तो भी माहौल हल्का कर देती हैं। एकदम अप-टू-डेट रहती हैं। सोशल मीडिया पर भी एक्टिव हैं। यह बात अलग है कि ज्यादातर अपडेट्स वह खुद न कर, अपनी बेटी से करती हैं। यूं तो उनका फिगर भी थोड़ा ज्यादा ही है, फिर भी कपड़े फैशन के हिसाब से ही पहनती हैं। उन्हें पिछड़ा हुआ रहना बिल्कुल पसंद नहीं। आजकल तो प्लाजो और जींस जमकर पहन रही हैं। कुल मिलाकर वह एकदम आधुनिक है। मम्मी ने कहा- "नैना आंटी के लिए चाय तो बना लो।" रीना आंटी ने जोड़ते हुए कहा -" और साथ में पापड़ भी"।

रीना आंटी मेरी निकली भी मैगजींस पढ़ने लगीं। तभी अचानक कुछ पढ़कर रीना आंटी विचिलित सी हो उठीं। उनको एकदम उदास हो गईं। मानो दिल डूब सा गया हो। वह उदास हो गईं। मैं चाय लेकर आई। आंटी गुमसुम सी बैठी थीं।

"क्या हुआ आंटी? अचानक से आप इतनी परेशान क्यों लग रही हैं?" मैंने पूछा। आंटी बोली "अरे भविष्यफल में कुछ भी ठीक नहीं निकला है इसलिए मेरा मन बेचैन सा हो रहा है।" मम्मी ने कहा- "ओ हो, इन सब चीजों को कोई इतनी गंभीरता से थोड़ी नहीं लेना होता है।" आंटी ने बोला- "अरे कुछ तो सच्चाई होती ही होगी न"।

मैंने पूछा- "अच्छा क्या लिखा है, जरा पढ़िए तो।" "आपका पूरा माह संघर्ष भरा रहेगा। किसी प्रियजन से मनमुटाव हो सकता है। आमदनी कम होगी व खर्च बढ़ेंगे"। आंटी ने दुखी होते हुए पढ़ा। मम्मी ने मुंह बनाकर कहा- "अरे सब फालतू की बातें हैं।" लेकिन रीना आंटी व्याकुल थी। अनायास ही उनकी हंसी कहीं गुम हो गई थी। "ओफ्फो... आप लोग भी न छोड़िए यह सब।" आंटी मम्मी सही कह रही हैं, इन सबको इतनी गंभीरता से लेने की जरूरत नहीं है। आप खुद ही सोचिए एक ही राशि के कितने सारे लोग होते हैं। यह कोई एक व्यक्ति विशेष आपके लिए ही नहीं है। "कम ऑन आंटी! डोंट बी सिली।" मेरी बातों का आंटी पर कोई खास असर होता नजर नहीं आया। तभी मेरी नजर मैगजीन के कवर पेज पर पड़ी। "ओ माय गॉड! अब आप लोग अपनी मूर्खता ओर अंधविश्वास पर जोर से हंसने को तैयार हो जाइए, क्योंकि" मैंने मैगजीन उठाते हुए कहा। "यह मैगजीन दो महीने पुरानी है, तो यह भविष्यफल भी दो महीने पुराना हुआ यानी बीत चुका है।" "क्या!" रीना आंटी के चेहरे पर चमक लौट आई और वह हो-हो करके हंस पड़ी। फिर हम सभी ने सुकून से चाय नाश्ते का आनंद लिया।

वैश्विक संस्कृति का प्रतीक बार्बी डॉल

आखिर कौन है, जिसने 'बार्बी डॉल' का नाम नहीं सुना है? बार्बी वह गुड़िया रही है, जिसने छोटे बच्चों विशेषकर लड़कियों की खेलने की दुनिया ही बदल दी। बार्बी ने अब तक बच्चों की कल्पनाओं, करियर और बदलाव का सफर तय किया है। कौन जानता था कि बार्बी दुनिया में इतनी प्रसिद्ध हो जाएगी। यह खिलौना मात्र नहीं है, बल्कि यह तो बच्चों के अनगिनत सपनों की गुड़िया है। इसकी लोकप्रियता के तो कहने ही क्या हैं? सच तो यह है कि बार्बी ने समाज पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

बार्बी गुड़िया जब 1959 में पहली बार न्यूयॉर्क खिलौना मेले में प्रस्तुत की गई, तब उसका रूप उस समय की अन्य गुड़ियाओं से बिल्कुल अलग था। दरअसल, उस दौर में ज्यादातर गुड़ियाएं छोटे बच्चों या शिशुओं के रूप में बनाई जाती थीं, लेकिन बार्बी को एक युवती के रूप में डिजाइन किया गया था। उसका शरीर किसी वयस्क महिला जैसा था, लंबे पैर, पतली कमर और स्टाइलिश व्यक्तित्व के साथ उसे एक फैशन मॉडल की तरह बनाया गया था।

सुनील कुमार महला
लेखक

बार्बी ने काले-सफेद धारीदार (ब्लैक एंड व्हाइट) स्विमसूट पहना हुआ था। उसके बाल सुनहरे या भूरे रंग के पोनीटेल स्टाइल में थे। इतना ही नहीं, उसके पैरों में हाई हील सैंडल और कानों में छोटे-छोटे ईयररिंग्स थे, जिससे उसका रूप आधुनिक और फैशनेबल दिखाई देता था। उस समय उसकी आंखें हल्की-सी नीचे की ओर झुकी हुई दिखाई देती थीं, जिन्हें बाद में बदलकर सामने देखने वाला बनाया गया। बार्बी का यह रूप उस समय की लड़कियों के लिए खास था, क्योंकि वे उसके माध्यम से खुद को भविष्य में अलग-अलग भूमिकाओं में कल्पना कर सकती थीं। यही कारण है कि यह गुड़िया जल्द ही बेहद लोकप्रिय हो गई और खिलौनों की दुनिया में एक नया अध्याय शुरू हुआ।

9 मार्च 1959 को अमेरिकी खिलौना कंपनी मैटल ने इस गुड़िया यानी कि बार्बी डॉल को मेले में प्रस्तुत किया था तथा इसका निर्माण कंपनी की सह-संस्थापक रूथ हैंडलर द्वारा किया गया था। दरअसल, उन्होंने यह देखा कि उस समय बाजार में मिलने वाली अधिकांश गुड़ियाएं छोटे बच्चों के रूप में बनाई जाती थीं, जबकि लड़कियां खेलते समय खुद को बड़े होकर अलग-अलग भूमिकाओं जैसे कि डॉक्टर, शिक्षक, वैज्ञानिक, खिलाड़ी या अन्य पेशों में कल्पना में देखना चाहती थीं। न्यूयॉर्क टॉय फेयर में जब बार्बी ने अपना डेब्यू किया, तो उसने खिलौनों की दुनिया को नई दिशा दी। लॉन्च होते ही यह गुड़िया बेहद लोकप्रिय हो गई और धीरे-धीरे केवल एक खिलौना नहीं, बल्कि एक वैश्विक सांस्कृतिक प्रतीक बन गई। समय के साथ इसके हजारों अलग-अलग रूप बनाए गए, जिनमें विभिन्न देशों की पोशाकें, जीवन-शैलियां और अनेक पेशे भी शामिल किए गए और इसी ऐतिहासिक शुरुआत की स्मृति में हर वर्ष 9 मार्च को 'बार्बी दिवस' मनाया जाता है, जब दुनिया भर में खिलौना प्रेमी, संग्राहक और बच्चे कार्यक्रमों, प्रदर्शनों और सोशल मीडिया के माध्यम से बार्बी की लोकप्रियता का उत्सव मनाते हैं।

बार्बी गुड़िया के बारे में कई ऐसे रोचक तथ्य भी हैं, जो बहुत कम लोगों को पता हैं। सबसे पहले, बार्बी का पूरा नाम बारबरा मिलिसेंट रॉबर्ट्स है, जो रुथ हैंडलर की बेटी बारबरा के नाम पर रखा गया था। इसी तरह बार्बी के बॉयफ्रेंड केन का नाम रुथ हैंडलर के बेटे केनेथ के नाम पर रखा गया। 1959 में जब पहली बार्बी लॉन्च हुई, तब इसकी कीमत लगभग 3 डॉलर थी, जबकि आज दुर्लभ और कलेक्टर एडिशन बार्बी गुड़ियाएं हजारों डॉलर में बिकती हैं।

बार्बी की शुरुआती डिजाइन

बार्बी के शुरुआती डिजाइन की प्रेरणा जर्मनी की बिल्ड लिली डॉल (दुनिया की पहली आधुनिक फैशन गुड़ियों में से एक) से मानी जाती है, जो एक कॉमिक स्ट्रिप पर आधारित गुड़िया थी। इसे वर्ष 1955 में जर्मनी में बनाया गया था। यह गुड़िया मूल रूप से बच्चों के लिए नहीं, बल्कि वयस्कों के लिए बनाया गया था। उल्लेखनीय है कि इसका चरित्र जर्मनी के प्रसिद्ध अखबार बिल्ड में प्रकाशित एक कॉमिक स्ट्रिप की पात्र लिली पर आधारित था। दरअसल, बिल्ड लिली लंबी, पतली और फैशनेबल कपड़ों में दिखाई जाती थी तथा उसके सुनहरे बाल, हाई हील्स और आकर्षक कपड़े उसकी विशेष पहचान थे। अमेरिकी कंपनी मैटल की सह-संस्थापक रूथ हैंडलर ने यूरोप यात्रा के दौरान बिल्ड लिली गुड़िया देखी और बाद में इससे प्रेरित होकर, उन्होंने 1959 में प्रसिद्ध गुड़िया बार्बी बनाई। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि 1964 में मैटल ने बिल्ड लिली के अधिकार खरीद लिए और बाद में इसका निर्माण बंद कर दिया। दिलचस्प बात यह है कि पहली बार्बी ने ब्लैक-एंड-व्हाइट धारीदार स्विमसूट पहना था और उसकी आंखों की पुतलियां नीचे की ओर झुकी हुई थीं। बाद में 1971 में उसका लुक बदलकर उसे सामने देखने वाला बनाया गया। समय के साथ बार्बी डॉल में हमें अनेक करियर देखने को मिले। मसलन, डॉक्टर, पायलट, कंप्यूटर इंजीनियर, खिलाड़ी, वैज्ञानिक और राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार वगैरह-वगैरह। सच तो यह है कि बार्बी डॉल केवल और केवल फैशन डॉल ही नहीं रही, बल्कि उसने 250 से अधिक करियर अपनाए। यहां तक कि बार्बी डॉल ने 1965 में एस्ट्रोनॉट बार्बी का रूप भी अपनाया, जो इंसान के चंद्रमा पर पहुँचने (1969) से लगभग चार साल पहले ही महिलाओं की अंतरिक्ष यात्रा की कल्पना को दर्शाती थी। इतना ही नहीं, बार्बी में विविधता भी धीरे-धीरे जोड़ी गई। उपलब्ध जानकारी के अनुसार 1968 में क्रिस्टी बार्बी नाम की अश्वेत गुड़िया (बार्बी की सहेली) पेश हुई, जबकि 1980 में पहली आधिकारिक ब्लैक बार्बी लॉन्च की गई। आज बार्बी अलग-अलग नस्लों, संस्कृतियों और शारीरिक बनावट जैसे सुडौल, लंबी और छोटी में भी बनाई जाती है।